महिलाएँ, जाति एवं सुधार

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» दो सौ साल पहले की सामाजिक स्थितियाँ

प्रश्न 1 (आसान). दो सौ साल पहले कौन सी प्रथा में विधवा को पति की चिता पर जलना पड़ता था?
उत्तर – सती प्रथा

प्रश्न 2 (आसान). क्या उस समय महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने की छूट थी?
उत्तर – नहीं, अक्सर उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था।

प्रश्न 3 (मध्यम). जातिगत भेदभाव के कारण निचली समझी जाने वाली जातियों को किन दो कामों से रोका जाता था?
उत्तर – उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने और सवर्ण जातियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कुओं से पानी निकालने से रोका जाता था।

प्रश्न 4 (कठिन). आज के समय से तुलना करते हुए, सती प्रथा को समाज में कैसे बढ़ावा दिया जाता था?
उत्तर – सती प्रथा को समाज में 'सदाचारी महिला' कहकर महिमामंडित किया जाता था। लोगों को लगता था कि ऐसा करके महिला अपने पति के प्रति अपनी निष्ठा साबित कर रही है, जबकि यह एक क्रूर और अमानवीय प्रथा थी।

» परिवर्तन की दिशा में उठते कदम: संचार और सुधारक

प्रश्न 5 (आसान). उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में संचार के कौन से नए तरीके विकसित हुए?
उत्तर – किताबें, अख़बार, पत्रिकाएँ, पर्चे और पुस्तिकाएँ।

प्रश्न 6 (आसान). राजा राममोहन रॉय ने किस सामाजिक प्रथा का विरोध किया?
उत्तर – सती प्रथा का।

प्रश्न 7 (मध्यम). संचार के नए तरीकों ने सामाजिक सुधारों में कैसे मदद की?
उत्तर – संचार के नए तरीकों ने लोगों तक विचारों को आसानी से पहुँचाया, जिससे वे गलत प्रथाओं को समझने और उनके खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित हुए।

प्रश्न 8 (कठिन). राजा राममोहन रॉय को 'सुधारक' क्यों कहा जाता था? उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तर – राजा राममोहन रॉय को 'सुधारक' इसलिए कहा जाता था क्योंकि वे मानते थे कि समाज में परिवर्तन लाना और अन्यायपूर्ण तरीकों से छुटकारा पाना ज़रूरी है। उन्होंने सती प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाई, लोगों को समझाया कि यह गलत है और इसके लिए प्राचीन ग्रंथों का सहारा लेकर तर्क दिए। उनके प्रयासों से सती प्रथा पर 1829 में प्रतिबंध लगा, जो एक बहुत बड़ा सामाजिक सुधार था।

» विधवाओं की जिंदगी में बदलाव: सती प्रथा का अंत और विधवा पुनर्विवाह

प्रश्न 9 (आसान). सती प्रथा को कब प्रतिबंधित किया गया था?
उत्तर – 1829 में।

प्रश्न 10 (आसान). विधवा पुनर्विवाह कानून किस वर्ष पारित हुआ?
उत्तर – 1856 में।

प्रश्न 11 (मध्यम). सती प्रथा के खिलाफ अभियान में किस प्रमुख समाज सुधारक का नाम जुड़ा है?
उत्तर – राजा राममोहन रॉय।

प्रश्न 12 (कठिन). ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने किस सामाजिक कुरीति को दूर करने के लिए संघर्ष किया?
उत्तर – विधवाओं के पुनर्विवाह के लिए।

» लड़कियों के लिए शिक्षा: स्कूल और घर पर पढ़ाई

प्रश्न 13 (आसान). उन्नीसवीं सदी में लड़कियों के लिए स्कूल खोलने वाले किन्हीं दो सुधारकों के नाम बताओ।
उत्तर – ईश्वरचंद्र विद्यासागर और ज्योतिराव फुले।

प्रश्न 14 (आसान). ज्यादातर लड़कियाँ उन्नीसवीं सदी में कहाँ पढ़ाई करती थीं?
उत्तर – घर पर ही।

प्रश्न 15 (मध्यम). लोगों को लड़कियों को स्कूल भेजने में क्या डर लगता था?
उत्तर – लोगों को डर था कि स्कूल लड़कियाँ को घर से निकाल ले जाएंगे, वे घरेलू कामकाज नहीं करेंगी, और सार्वजनिक स्थानों से गुजरने से बिगड़ जाएंगी।

प्रश्न 16 (कठिन). मुस्लिम परिवारों में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए?
उत्तर – मुस्लिम परिवारों में लड़कियों को घर पर अरबी में कुरान शरीफ पढ़ाने के लिए शिक्षिकाएँ रखी जाती थीं, और मुमताज़ अली जैसे सुधारकों ने शिक्षा का अधिकार दिलाने की बात कही। बाद में भोपाल की बेगमों और बेगम रुकैया सखावत हुसैन जैसी महिलाओं ने मुस्लिम लड़कियों के लिए स्कूल भी खोले।

» महिलाओं के बारे में महिलाएँ लिखने लगीं

प्रश्न 17 (आसान). भोपाल की बेगमों ने लड़कियों के लिए कहाँ स्कूल खोला?
उत्तर – अलीगढ़

प्रश्न 18 (आसान). किस महिला ने 'स्त्रीपुरुषतुलना' नामक किताब लिखी?
उत्तर – ताराबाई शिंदे

प्रश्न 19 (मध्यम). पंडिता रमाबाई ने विधवा महिलाओं के लिए क्या स्थापना की थी और क्यों?
उत्तर – उन्होंने पुणे में एक विधवा गृह की स्थापना की थी, जहाँ ससुराल वालों के अत्याचार झेल रही महिलाओं को पनाह दी जाती थी और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए चीज़ें सिखाई जाती थीं।

प्रश्न 20 (कठिन). महिलाओं के लिखने से समाज में क्या बदलाव आए और रूढ़िवादी लोगों ने इस पर कैसी प्रतिक्रिया दी?
उत्तर – महिलाओं के लिखने से समाज में महिलाओं की स्थिति पर आलोचनात्मक विचार सामने आए, बाल विवाह जैसी परंपराओं को चुनौती मिली और महिलाओं को मताधिकार जैसे अधिकारों के लिए संगठित होने की प्रेरणा मिली। रूढ़िवादी खेमे के लोग इससे आग-बबूला हुए, उन्हें लगा कि हिन्दू संस्कृति भ्रष्ट हो रही है और पारिवारिक संस्कार नष्ट हो जाएंगे, जिससे वे चिंतित थे।

» जाति और समाज सुधार: नए अवसर और शहरों की ओर पलायन

प्रश्न 21 (आसान). उन्नीसवीं सदी में जाति उन्मूलन के लिए मुंबई में कौन सी संस्था बनी थी?
उत्तर – परमहंस मंडली

प्रश्न 22 (आसान). निम्न जाति के लोग शहरों में काम की तलाश में क्यों गए?
उत्तर – गाँवों में ज़मींदारों के दमन और भेदभाव से बचने के लिए।

प्रश्न 23 (मध्यम). समाज सुधारकों ने जातिगत भेदभाव को खत्म करने के लिए क्या तरीके अपनाए?
उत्तर – उन्होंने जाति व्यवस्था की आलोचना की, सभी जातियों की आध्यात्मिक समानता पर ज़ोर दिया, और गुप्त बैठकों में जातिगत नियमों (जैसे भोजन और स्पर्श) का उल्लंघन किया।

प्रश्न 24 (कठिन). शहरों में निम्न जातियों को किस प्रकार के नए काम के अवसर मिले? कोई तीन उदाहरण दीजिए।
उत्तर – शहरों में उन्हें कुली, खुदाई करने वाले, बोझा ढोने वाले, ईंट बनाने वाले, नालियाँ साफ़ करने वाले, सफ़ाईकर्मी जैसे काम मिले।

» समानता और न्याय की माँग: गैर-ब्राह्मण आंदोलन

प्रश्न 25 (आसान). सतनामी आंदोलन किसने शुरू किया था?
उत्तर – घासीदास ने।

प्रश्न 26 (आसान). श्री नारायण गुरु का प्रसिद्ध कथन क्या था?
उत्तर – 'ओरु जाति, ओरु मतम्, ओरु दैवम मनुष्यानु'।

प्रश्न 27 (मध्यम). हरिदास ठाकुर ने किस पंथ की स्थापना की और उसका उद्देश्य क्या था?
उत्तर – उन्होंने मतुआ पंथ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य जाति व्यवस्था को सही ठहराने वाले ब्राह्मणवादी ग्रंथों पर सवाल उठाना था।

प्रश्न 28 (कठिन). गैर-ब्राह्मण आंदोलन में प्रमुख नेताओं का क्या लक्ष्य था और उन्होंने अपने समुदायों के लिए क्या करने की कोशिश की?
उत्तर – उनका लक्ष्य सामाजिक समानता और न्याय की मांग करना था। उन्होंने अपने समुदायों में स्वाभिमान की भावना पैदा करने और उन आदतों व तौर-तरीकों को बदलने की कोशिश की जो प्रभुत्वशाली जातियों द्वारा अपमान का कारण बनती थीं।

» ज्योतिराव फुले और 'गुलामगीरी'

प्रश्न 29 (आसान). ज्योतिराव फुले ने किस पुस्तक की रचना की?
उत्तर – 'गुलामगीरी'

प्रश्न 30 (आसान). फुले के अनुसार आर्य कहाँ से आए थे?
उत्तर – उपमहाद्वीप के बाहर से

प्रश्न 31 (मध्यम). ज्योतिराव फुले ने 'गुलामगीरी' पुस्तक क्यों लिखी थी?
उत्तर – उन्होंने इसे भारत की 'निम्न' जातियों और अमेरिका के काले गुलामों की दुर्दशा को एक-दूसरे से जोड़ने और जातीय भेदभाव के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए लिखा था।

प्रश्न 32 (कठिन). ज्योतिराव फुले ने 'आर्यों के श्रेष्ठता के दावे' को किस आधार पर चुनौती दी?
उत्तर – उन्होंने यह तर्क देकर चुनौती दी कि आर्य विदेशी थे और उन्होंने भारत के मूल निवासियों को हराकर गुलाम बनाया था, इसलिए उनका ज़मीन और सत्ता पर कोई अधिकार नहीं है।

» मंदिरों में कौन जा सकता था? अंबेडकर का मंदिर प्रवेश आंदोलन

प्रश्न 33 (आसान). मंदिर प्रवेश आंदोलन कब शुरू हुआ था?
उत्तर – 1927 में

प्रश्न 34 (आसान). मंदिर प्रवेश आंदोलन के पीछे मुख्य व्यक्ति कौन थे?
उत्तर – डॉक्टर बी.आर. अंबेडकर

प्रश्न 35 (मध्यम). डॉक्टर अंबेडकर ने मंदिर प्रवेश आंदोलन क्यों चलाया था?
उत्तर – उन्होंने यह आंदोलन जातीय पूर्वाग्रहों को उजागर करने और दलितों के लिए मंदिरों में प्रवेश के साथ-साथ सामाजिक समानता और सम्मान का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए चलाया था।

प्रश्न 36 (कठिन). मंदिर प्रवेश आंदोलन का भारतीय समाज पर क्या दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा?
उत्तर – इस आंदोलन ने जातीय भेदभाव के खिलाफ राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण बहस छेड़ी, जिसने दलितों के अधिकारों और सम्मान के लिए भविष्य के आंदोलनों की नींव रखी। इसने समाज को यह सोचने पर मजबूर किया कि धार्मिक स्थानों में भी सभी को समानता का अधिकार मिलना चाहिए, और धीरे-धीरे सामाजिक सोच में बदलाव आया।

» पेरियार का स्वाभिमान आंदोलन

प्रश्न 37 (आसान). पेरियार का पूरा नाम क्या था?
उत्तर – ई.वी. रामास्वामी नायकर

प्रश्न 38 (आसान). स्वाभिमान आंदोलन किसने शुरू किया?
उत्तर – पेरियार

प्रश्न 39 (मध्यम). पेरियार ने दावत में क्या देखकर स्वाभिमान आंदोलन शुरू करने का फैसला किया?
उत्तर – दावत में जातियों के हिसाब से लोगों को अलग-अलग बैठाने का इंतज़ाम देखकर।

प्रश्न 40 (कठिन). पेरियार किस बात की आलोचना करते थे और उनका मानना था कि इससे किसे फायदा होता है?
उत्तर – वे ब्राह्मणवादी दावों और सभी धर्मों में निहित सामाजिक असमानता की आलोचना करते थे। उनका मानना था कि ब्राह्मणों ने निचली जातियों पर अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए धार्मिक ग्रंथों का सहारा लिया है।

» सुधारों के लिए संगठित होना: विभिन्न सुधारवादी संगठन

प्रश्न 41 (आसान). प्रार्थना समाज का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – जाति व्यवस्था और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करना।

प्रश्न 42 (आसान). मुस्लिम समाज में शिक्षा के लिए कौन सा आंदोलन शुरू हुआ?
उत्तर – अलीगढ़ आंदोलन।

प्रश्न 43 (मध्यम). राजा राममोहन रॉय ने अपने सुधारों के लिए प्राचीन ग्रंथों का उपयोग कैसे किया?
उत्तर – उन्होंने प्राचीन धार्मिक ग्रंथों से ऐसे श्लोक और वाक्य ढूंढे जो उनकी सोच का समर्थन करते थे, यह साबित करने के लिए कि वर्तमान रीति-रिवाज प्रारंभिक परंपरा के खिलाफ हैं।

प्रश्न 44 (कठिन). विभिन्न सुधारवादी संगठनों के उदय का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – समाज में फैली कुरीतियाँ जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, जातिगत भेदभाव, और महिलाओं व निचली जातियों के प्रति अन्याय। नए संचार माध्यमों (किताबें, अखबार) के विकास से विचारों का प्रसार आसान हुआ, जिससे इन संगठनों को लोगों को संगठित करने में मदद मिली।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. दो सौ साल पहले महिलाओं को किन दो मुख्य अधिकारों से वंचित रखा जाता था?

› पहला, महिलाओं के पास संपत्ति के अधिकार बहुत सीमित थे। उन्हें अपने पिता या पति की संपत्ति में से ज़्यादा हिस्सा नहीं मिलता था।

› दूसरा, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। लड़कियों को स्कूल भेजना तो दूर की बात थी, घर में भी पढ़ने-लिखने की मनाही थी।

उत्तर – संपत्ति का अधिकार और शिक्षा का अधिकार।

उदाहरण 2. राजा राममोहन रॉय ने किस प्रथा के खिलाफ़ आवाज़ उठाई और संचार के नए तरीकों ने इसमें कैसे मदद की?

› राजा राममोहन रॉय ने मुख्य रूप से 'सती प्रथा' के खिलाफ आवाज़ उठाई, जिसमें विधवाओं को पति की चिता पर जला दिया जाता था.

› उन्होंने 'अपने लेखन के ज़रिए यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन ग्रंथों में विधवाओं को जलाने की अनुमति कहीं नहीं दी गई है'. उन्होंने कई भाषाओं में पर्चे और किताबें लिखीं.

› ये किताबें और पर्चे लोगों तक आसानी से पहुँचे क्योंकि 'पहली बार किताबें, अख़बार, पत्रिकाएँ, पर्चे और पुस्तिकाएँ छप रही थीं' और ये 'पहले के साधनों के मुकाबले सस्ती थीं' और 'ज्यादा लोगों की पहुँच में भी थीं'.

› इन छपी हुई सामग्री को पढ़कर लोग सती प्रथा की सच्चाई और धार्मिक आधार को समझने लगे, जिससे जनमत तैयार हुआ.

› उनकी दलीलों और जनमत के दबाव के कारण 1829 में सती प्रथा पर पाबंदी लगा दी गई.

उत्तर – राजा राममोहन रॉय ने सती प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाई। संचार के नए तरीकों (किताबें, अख़बार, पर्चे) ने उनके विचारों को दूर-दूर तक फैलाने में मदद की, जिससे लोग जागरूक हुए और इस प्रथा पर 1829 में प्रतिबंध लग सका।

उदाहरण 3. सती प्रथा का अंत किस वर्ष हुआ और इस अभियान में किस सुधारक का मुख्य योगदान था?

› हमें याद रखना चाहिए कि समाज सुधारकों ने बहुत सी कुरीतियों के खिलाफ काम किया।

› सती प्रथा एक ऐसी ही कुरीति थी, जिसे खत्म करने के लिए राजा राममोहन रॉय ने आवाज उठाई।

› उनके प्रयासों से ब्रिटिश सरकार ने इस पर कानून बनाया।

› यह कानून 1829 में पारित हुआ था।

उत्तर – सती प्रथा का अंत 1829 में हुआ और इसमें राजा राममोहन रॉय का मुख्य योगदान था।

उदाहरण 4. उन्नीसवीं सदी में लड़कियों की शिक्षा में मुख्य चुनौतियाँ क्या थीं और उनका समाधान कैसे निकाला गया?

› पहला चरण: चुनौतियों को पहचानें। मुख्य चुनौती लोगों का लड़कियों को स्कूल भेजने का डर था कि वे बिगड़ जाएंगी या घर का काम नहीं करेंगी। सार्वजनिक स्थानों से होकर स्कूल जाना भी एक समस्या थी।

› दूसरा चरण: समाधानों को देखें। शुरुआत में, 'घर पर ही पढ़ाई' एक बड़ा समाधान था, जहां पिता या पति के सहयोग से लड़कियां शिक्षित होती थीं। राशसुंदरी देबी जैसी महिलाओं ने तो खुद ही पढ़ना-लिखना सीखा।

› तीसरा चरण: बाद के प्रयासों को समझें। बाद में, आर्य समाज (पंजाब) और ज्योतिराव फुले (महाराष्ट्र) जैसे सुधारकों ने लड़कियों के लिए स्कूल खोले। मुस्लिम परिवारों में भी शिक्षिकाओं को घर पर रखकर अरबी में कुरान शरीफ पढ़ाया जाने लगा, और भोपाल की बेगमों व बेगम रुकैया ने मुस्लिम लड़कियों के लिए स्कूल खोले।

उत्तर – उन्नीसवीं सदी में लड़कियों की शिक्षा की मुख्य चुनौती सामाजिक रूढ़िवादिता और स्कूल भेजने के प्रति लोगों का डर था। इसका समाधान घर पर पढ़ाई, महिलाओं द्वारा स्वयं शिक्षा ग्रहण करने, और बाद में विभिन्न सुधारकों व महिला नेताओं द्वारा लड़कियों के लिए स्कूल खोलने से निकाला गया।

उदाहरण 5. बीसवीं सदी की शुरुआत में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में मुस्लिम महिलाओं की क्या भूमिका थी?

› पहला कदम: मुस्लिम महिलाओं ने लड़कियों के लिए स्कूल खोलने में अहम भूमिका निभाई।

› दूसरा कदम: भोपाल की बेगमों ने अलीगढ़ में लड़कियों के लिए प्राथमिक स्कूल खोला।

› तीसरा कदम: बेगम रुकैया सखावत हुसैन ने कोलकाता और पटना में मुस्लिम लड़कियों के लिए स्कूल खोले और रूढ़िवादी विचारों की कटु आलोचक थीं।

› निष्कर्ष: इस प्रकार, मुस्लिम महिलाओं ने शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की नींव रखी।

उत्तर – बीसवीं सदी की शुरुआत में भोपाल की बेगमों और बेगम रुकैया सखावत हुसैन जैसी मुस्लिम महिलाओं ने लड़कियों के लिए स्कूल खोलकर और रूढ़िवादी विचारों की आलोचना करके महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उदाहरण 6. उन्नीसवीं सदी में जाति आधारित भेदभाव से मुक्ति पाने में शहरों की भूमिका को समझाइए।

› उन्नीसवीं सदी में गाँवों में निम्न जाति के लोगों को सामाजिक भेदभाव और ज़मींदारों के दमन का सामना करना पड़ता था।

› इसी समय नए शहर विकसित हो रहे थे और उनमें कई नए तरह के काम जैसे सड़क निर्माण, इमारतें बनाना, सफाई करना आदि उपलब्ध थे।

› इन कामों के लिए बड़ी संख्या में मज़दूरों की आवश्यकता थी।

› निम्न जाति के लोगों ने गाँवों में मिलने वाले अपमान और शोषण से बचने के लिए शहरों की ओर पलायन किया।

› शहरों में उन्हें नए अवसर मिले, जहाँ उनकी जाति के बजाय उनके काम और मेहनत को ज़्यादा महत्व दिया गया।

› इस प्रकार, शहरों ने निम्न जातियों के लोगों को अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति सुधारने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

उत्तर – शहरों ने निम्न जातियों के लोगों को गाँव के भेदभाव और दमन से निकलकर नए अवसर और बेहतर जीवन की तलाश का मौका दिया।

उदाहरण 7. गैर-ब्राह्मण आंदोलन के किन्हीं दो प्रमुख नेताओं और उनके योगदान पर प्रकाश डालिए।

› पहला नेता: संत घासीदास। उन्होंने मध्य भारत में सतनामी आंदोलन शुरू किया।

› उनका योगदान: उन्होंने चमड़े का काम करने वाले लोगों को संगठित किया और उनकी सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए काम किया।

› दूसरा नेता: श्री नारायण गुरु। वे केरल के थे और ऐझावा जाति से संबंधित थे।

› उनका योगदान: उन्होंने अपने लोगों के बीच एकता का आदर्श रखा और जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उनका मशहूर कथन था: 'ओरु जाति, ओरु मतम्, ओरु दैवम मनुष्यानु' (मानवता की एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर)।

उत्तर – गैर-ब्राह्मण आंदोलन के दो प्रमुख नेता संत घासीदास (सतनामी आंदोलन) और श्री नारायण गुरु (जातिगत एकता का आदर्श) थे। उन्होंने क्रमशः चमड़े का काम करने वाले और ऐझावा समुदाय के लोगों को संगठित कर सामाजिक समानता व स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया।

उदाहरण 8. ज्योतिराव फुले ने 'गुलामगीरी' नामक अपनी पुस्तक में किन दो समूहों की दुर्दशा को एक-दूसरे से जोड़ा?

› पहला समूह भारत की 'निम्न' जातियाँ थीं, जिनके साथ भेदभाव होता था।

› दूसरा समूह अमेरिका के 'काले गुलाम' थे, जो अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे थे।

› फुले ने इन दोनों समूहों के शोषण और अपमान की स्थितियों को समान माना और अपनी पुस्तक में इसका ज़िक्र किया।

उत्तर – ज्योतिराव फुले ने अपनी पुस्तक 'गुलामगीरी' में भारत की 'निम्न' जातियों और अमेरिका के 'काले गुलामों' की दुर्दशा को एक-दूसरे से जोड़ा।

उदाहरण 9. डॉक्टर अंबेडकर ने मंदिर प्रवेश आंदोलन क्यों शुरू किया था और इसका क्या महत्व था?

› पहला कदम: डॉ. अंबेडकर ने देखा कि दलितों को मंदिरों में प्रवेश करने से रोका जाता था और वे मंदिरों के जल स्रोतों का इस्तेमाल भी नहीं कर सकते थे।

› दूसरा कदम: यह भेदभाव जातीय पूर्वाग्रहों का एक मज़बूत उदाहरण था, जो दलितों को सम्मान और समानता के अधिकार से वंचित रखता था।

› तीसरा कदम: उन्होंने 1927 में मंदिर प्रवेश आंदोलन शुरू किया, जिसमें महाड़ जाति के लोगों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया।

› चौथा कदम: अंबेडकर का उद्देश्य यह दिखाना था कि जातीय भेदभाव कितना गहरा है और सभी के लिए धार्मिक समानता की मांग करना था।

› पांचवां कदम: उन्होंने 1927 से 1935 के बीच ऐसे तीन आंदोलन चलाए, जिससे समाज में गहरी बहस छिड़ी और समानता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ा।

उत्तर – डॉक्टर अंबेडकर ने जातीय पूर्वाग्रहों को उजागर करने और दलितों के लिए धार्मिक समानता व सम्मान का अधिकार दिलवाने के लिए मंदिर प्रवेश आंदोलन शुरू किया। इसका महत्व यह था कि इसने समाज में गहरे बैठे जातिगत भेदभाव को चुनौती दी और समानता की लड़ाई को आगे बढ़ाया।

उदाहरण 10. पेरियार ने स्वाभिमान आंदोलन क्यों शुरू किया?

› पेरियार ने देखा कि समाज में जातीय भेदभाव बहुत गहरा है, खासकर दावतों में जहाँ जातियों के आधार पर अलग बैठने का इंतज़ाम था।

› उन्हें लगा कि निचली समझी जाने वाली जातियों को अपना सम्मान और अधिकार खुद हासिल करने होंगे।

› उन्होंने महसूस किया कि धार्मिक ग्रंथ और नेता भी अक्सर इन सामाजिक विभाजनों को बढ़ावा देते हैं, इसलिए इन असमानताओं के खिलाफ आवाज़ उठाना ज़रूरी है।

› इन सब कारणों से उन्होंने स्वाभिमान आंदोलन शुरू किया ताकि सभी को आत्म-सम्मान और समानता मिल सके।

उत्तर – पेरियार ने स्वाभिमान आंदोलन इसलिए शुरू किया ताकि 'अछूतों' को जातीय भेदभाव से मुक्ति मिल सके और वे अपने आत्म-सम्मान के लिए खुद लड़ सकें।

उदाहरण 11. ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे और उन्होंने किस मुख्य सुधार पर जोर दिया?

› पहला कदम, हम याद करेंगे कि ब्रह्म समाज का नाम 'राजा राममोहन रॉय' से जुड़ा है।

› दूसरा कदम, हम सोचेंगे कि राजा राममोहन रॉय ने किन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ काम किया। उन्होंने खास तौर पर 'सती प्रथा' को बंद करवाने में अहम भूमिका निभाई।

उत्तर – ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन रॉय थे। उन्होंने मुख्य रूप से सती प्रथा को समाप्त करने और महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता तथा समानता दिलाने पर जोर दिया।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• इस भाग से 'सती प्रथा' और 'जातिगत भेदभाव' पर सीधे सवाल आ सकते हैं। इनकी मुख्य बातें और उनके प्रभाव को अच्छे से समझना।

• राजा राममोहन रॉय और सती प्रथा पर प्रतिबंध (1829) पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से याद रखना.

• यह दोनों तारीखें और समाज सुधारकों के नाम बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। सीधे सवाल आते हैं, इसलिए इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• यह विषय सामाजिक बदलावों से जुड़ा है, इसलिए उन सुधारकों के नाम और उनके योगदान को याद रखना महत्वपूर्ण है जिन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काम किया। साथ ही, समाज की रूढ़िवादी सोच और उसके खिलाफ हुए प्रयासों को भी समझना ज़रूरी है।

• ताराबाई शिंदे और पंडिता रमाबाई के योगदान पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, उनके कार्यों और किताबों के नाम ज़रूर याद रखना।

• यह विषय सामाजिक सुधारों में आर्थिक कारकों की भूमिका को समझने के लिए महत्वपूर्ण है; इसे हमेशा दोनों पहलुओं के साथ समझाएँ।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर घासीदास, हरिदास ठाकुर और श्री नारायण गुरु के योगदान पर सीधा प्रश्न आता है, इसलिए उनके आंदोलनों और मुख्य विचारों को अच्छी तरह याद कर लें।

• ज्योतिराव फुले और 'गुलामगीरी' पर अक्सर छोटे प्रश्न या बहुविकल्पीय प्रश्न आते हैं, खासकर पुस्तक के नाम और उसके विषय-वस्तु को लेकर।

• यह प्रश्न सीधे तौर पर बोर्ड परीक्षा में आ सकता है, 'पेरियार के स्वाभिमान आंदोलन के मुख्य उद्देश्य क्या थे?' इसे अच्छे से समझ लेना बच्चों।

• बोर्ड परीक्षा में इन संगठनों के नाम, उनके संस्थापक और उनके मुख्य कार्य अक्सर मिलान करने (matching) वाले प्रश्नों में पूछे जाते हैं। हर संगठन का मुख्य उद्देश्य ज़रूर याद रखना।

एक नज़र में रिवीज़न

› 200 साल पहले: सती, बाल विवाह, महिला शिक्षा-संपत्ति सीमित, जातिभेद।
› संचार के नए तरीके और राजा राममोहन रॉय जैसे सुधारकों ने सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी।
› सती प्रथा का अंत (1829, राजा राममोहन रॉय); विधवा पुनर्विवाह (1856, ईश्वरचंद्र विद्यासागर)।
› लड़कियों की शिक्षा: स्कूल खुले, पर घर पर पढ़ाई भी; राशसुंदरी देबी ने खुद सीखा।
› शिक्षित महिलाओं ने लेखों व किताबों द्वारा सामाजिक भेदभाव को चुनौती दी।
› जाति सुधार: सुधारकों के प्रयास + शहरों में नए अवसर = निम्न जातियों का पलायन.
› गैर-ब्राह्मण आंदोलन: घासीदास, हरिदास, श्री नारायण गुरु ने जातिगत भेदभाव के खिलाफ समानता की माँग की।
› फुले: आर्यों की श्रेष्ठता का खंडन, 'गुलामगीरी' (निम्न जाति + अमेरिकी गुलाम)।
› पेरियार: स्वाभिमान आंदोलन, जातीय असमानता और ब्राह्मणवादी दावों का विरोध।
› ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, अलीगढ़ आंदोलन: प्रमुख सुधारवादी संगठन।